Guidance & Counselling

(A) शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता

व्यक्ति के विकास से सम्बन्धित समस्त प्रक्रियाओं में शिक्षा का सर्वाधिक महत्व है। यही एक मात्र ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति एवं समाज के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन लाये जाने सम्भव हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा ही किसी समाज अथवा राष्ट्र के स्वरूप में वांछित परिवर्तन करके उसे प्रगति की दिशा में अग्रसारित किया जा सकता है। किसी समाज का जो भी स्वरूप आज सामने है वह स्वरूप उस समाज के निवासियों में प्रदान की गई पूर्व शिक्षा का ही परिणाम है। इसलिए भावी समाज का स्वरूप हमें सर्वोत्कृष्ट बनाना है तो वर्तमान शिक्षा को भी भावी अपेक्षाओं के अनुकूल बनाना चाहिए। परन्तु यह तभी सहचर के रूप में निर्देशन का भी समुचित प्रयोग करें।

i) **वैयक्तिक भिन्नता के अनुरूप शिक्षा का विकास** → स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। जनसंख्या की इस वृद्धि का समाज के प्रायः समस्त क्षेत्रों पर किसी-न-किसी रूप में प्रभाव हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म हुआ, जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है, विद्यालयों में छात्रों की निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, विद्यालयों तथा प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, छात्र असन्तोष आदि समस्याएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि छात्रों को वैयक्तिक भिन्नता के अनुरूप ही शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

JANUARY

M	30	2	9	16	23
T	31	3	10	17	24
W		4	11	18	25
T		5	12	19	26
F		6	13	20	27
S		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

Notes

Scanned with CamScanner

2. छात्र असन्तोष की समस्या के समाधान की आवश्यकता —

वर्तमान विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्र असन्तोष की समस्या एक सामान्य एवं गम्भीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रही है। छात्रों की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति न हो पाना इसका प्रमुख कारण है। वैयक्तिक एवं सामाजिक दृष्टि से यदि छात्रों का विकास वांछित दिशा में होता है तो इस प्रकार की समस्या के उत्पन्न होने का प्रश्न नहीं होता है। वे अपनी रचनात्मक प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सकें, अपनी चिन्तन शक्ति को प्रखर बनाकर ठीक-ठीक निर्णय ले सकें तथा अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करके आगे बढ़ सकें। इस स्थिति में छात्र-असन्तोष का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस समस्या को समाप्त करने के लिए यह आवश्यकता है कि विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में निर्देशन सेवाओं को आयोजित किया जाये। शिक्षा एवं निर्देशन के समन्वित योगदान से ही इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

3) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान की आवश्यकता —

भारतीय विद्यालयों में अपव्यय एवं अवरोध की समस्या निरन्तर गम्भीर रूप धारण करती जा रही है। इस समस्या के समाधान हेतु भारतीय सरकार द्वारा गठित आयोगों के द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सुझाव भी समय-समय पर दिए गए हैं। शैक्षिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने से पूर्व ही विद्यालय छोड़ देना या मानसिक में शिक्षा प्राप्ति के अवसरों से वंचित हो जाना है। जब कोई छात्र किसी स्तर की शिक्षा प्राप्त करने से पूर्व ही विद्यालय को छोड़ अनुत्तीर्ण होता रहता है।

Phone/Email/Notes

Notes

DECEMBER

Scanned with CamScanner

4) ऐच्छिक पाठ्यक्रम का चयन :- ज्ञान के असीमित प्रसार के कारण अनेक नवीन विषयों एवं उप-विषयों का समावेश किया गया है। इन समस्त विषयों के अध्ययन के लिए पृथक्-पृथक् स्तर की रुचि, अभिरुचि एवं योग्यता वाले छात्रों की आवश्यकता होती है। अभिरुचि, क्षमता, बुद्धि आदि की दृष्टि से उत्पन्न वैयक्तिक विभिन्नता इसका प्रमुख कारण है। पाठ्यक्रम का चयन विद्यार्थी की वैयक्तिक भिन्नता के अनुरूप ही होना चाहिए।

5) शैक्षिक उपलब्धि का वांछित स्तर बनाए रखने की आवश्यकता :- विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्र, अपने उपलब्धि स्तर को बनाए रखने अथवा उस स्तर में वृद्धि करने की दृष्टि से भी, निर्देशन का लाभ उठा सकते हैं।

6. शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन का अत्यधिक महत्व है। पाठ्यक्रम के चयन से लेकर सन्तोषप्रद शैक्षिक स्तर को कायम रखने तक की प्रक्रिया में निर्देशन का आवश्यकतानुसार उपयोग किया जा सकता है। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में निर्देशन सेवा की यथोचित आवश्यकता को अभी तक भी अनुभूत नहीं किया जा सकता है। इस दिशा में तत्काल कदम उठाये जायें और छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ न किया जाए।

Phone/Email/Notes

Notes

(ख) सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता
समाज को निरंतर प्रगति की दिशा में अग्रसित करने हेतु, शान्ति एवं सुरक्षा का वातावरण बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि समाज में ऐसे नागरिकों का विकास किया जाए जो समाज की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित हो तथा समाज के साथ समायोजन करते हुए अपना योगदान दे सके। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्ति एवं समाज की उपादेयता का ज्ञान हो, जा दे सके।

i) समुचित स्थानापन्न का महत्व - व्यक्ति की क्षमता एवं योग्यता के अनुरूप कार्य के अवसर प्राप्त होने का व्यक्ति और समाज के महत्व शान्ति, सुरक्षा एवं संतोष से गहन सम्बन्ध है। प्रगतिशील देशों के विकास का यह एक प्रमुख कारण है। यहाँ मानवीय क्षमता के समुचित उपयोग पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता। भारत देश में उचित नियोजन का सर्वथा अभाव रहा है। उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त भी हमारे देश के अनेक प्रतिभाशाली छात्र रोजगार के लिए वर्षों-2 वर्ष तक भटकते रहते हैं।

Phone/Email/Notes

Notes

DECEMBER

2) <u>महिलाओं के व्यावसायिक अभिगमन</u> – भारतीय संविधान के अनुसार स्त्रियों तथा पुरुषों को विकास एवं प्रगति के समान अवसर प्रदान किए जाने की घोषणा के उपरान्त व्यावसायिक जगत में स्त्रियों के प्रवेश की संख्या बढ़ी है। उच्चतर शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके शहर और गाँव की महिलाएँ आज अनेक व्यवसायों में कार्य कर रही हैं। शिक्षा, उद्योग, पुलिस, सेना, अनुसंधान आदि विविध क्षेत्रों में इनकी भागीदारी निःसंदेह अति महत्वपूर्ण है। विवशता से लेकर उनकी स्वयं आवश्यकता एवं संतुष्टि के मनोविज्ञान का उचित ज्ञान सिखाकर आर्थिक दबाव वाले ऐसे पुरुषों का एक असहयोगी वर्ग के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है। नौकरियों में अनेक समझदार स्त्रियाँ इस प्रकार के पुरुषों को प्रभावित करने के लिए अपनी युक्तियों का प्रयोग कर रही हैं।

3) <u>परिवार की परिवर्तित परिस्थितियाँ</u> :- स्वतंत्रता से पूर्व तक भारत में संयुक्त परिवारों की ही प्रधानता थी। किसी भी रोजगार को प्राप्त करके जीविकोपार्जन के उद्देश्य से गाँवों की एक विशाल जनसंख्या आज शहरों की ओर आ रही है। माँ-2 को छोड़कर पिता बालकों को छोड़कर शीघ्र इस कोशिश में है (उनकी आवश्यकता पूर्ति हेतु पर्याप्त वेतन मिल सके।)

Phone/Email/Notes

JANUARY

M	30	2	9	16	23
T	31	3	10	17	24
W		4	11	18	25
T		5	12	19	26
F		6	13	20	27
S		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

Notes

Scanned with CamScanner

उद्योग धंधों → एक समय था जब व्यक्ति अपने परम्परागत व्यवसाय अथवा उद्योग को ही अपनी जीविकोपार्जन का साधन बनाता था। गाँवों में अपनी रुचि प्रदर्शित करते हुए आधिकाधिक [illegible] का प्रयास करता था। औद्योगिक प्रगति के परिणामस्वरूप श्रमिक के स्थान पर मशीनों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है। लघु उद्योगों का तो मानो अंत ही हो गया। [illegible] मशीनों के प्रयोग [illegible] बच्चों का [illegible] कर रहे हैं [illegible] अपनी आजीविका का उपार्जन [illegible]। लघु उद्योगों में मशीनों का प्रयोग [illegible] चाहिए।

5. जनसंख्या वृद्धि की समस्या →

भारत की विशाल जनसंख्या [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] पर [illegible] महत्वपूर्ण [illegible] का संचालन [illegible] समस्या के [illegible] में किया जाता रहा है। [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] जनसंख्या में [illegible] समस्या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का प्रभावी उपयोग किया जाता है।

6. मानवीय संसाधनों का अनुचित उपयोग →

वैज्ञानिक आविष्कारों के परिणामस्वरूप [illegible] के क्षेत्र में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उद्योग में [illegible] [illegible] [illegible] का अवसर प्राप्त हो रहा है।

Scanned with CamScanner

7) परिवर्तित सामाजिक मूल्य — नवसंरचना की चाह।

औद्योगीकरण, एकल परिवार प्रथा आदि के कारण आज देश आर्थिक, सामाजिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप पूर्व स्थापित मान्यताओं, आदर्शों एवं मूल्यों में भी निरन्तर परिवर्तन हुए हैं। तत्कालीन युग में न तो पुरातन मूल्यों में आस्था उत्पन्न हो पा रही है। न ही नवीन मूल्यों का निर्धारण हो पा रहा है।

8) अवकाश का समुचित उपयोग करने हेतु आवश्यकता

'मानसिक अवस्था में व्यक्ति को कार्य के उपरान्त अवकाश के क्षणों की भी पर्याप्त आवश्यकता होती है परन्तु अवकाश के क्षणों का उचित उपयोग करने की कला में प्रत्येक व्यक्ति दक्ष नहीं होता है। शिक्षा में इस प्रकार की अनेक व्यवस्थाएं हैं जिनकी सहायता से व्यक्ति को यह ज्ञात हो सकता है कि अपने अवकाश का समुचित उपयोग किस प्रकार करें।

9) मानवीय क्षमता के अपव्यय को नियन्त्रित करने हेतु आवश्यकता — व्यक्ति और समाज की समग्र प्रगति के लिए यह भी आवश्यक है मानवीय क्षमताओं का अपव्यय न होने दिया जाए। किसी भी कार्य को उसी रीति से करना उपयुक्त होता है जिसमें श्रम, धन एवं समय का व्यय कम हो तथा उपलब्धि अधिक हो। अधुना अर्थात काफी समय की [illegible] एवं समय में आदि [illegible] होने वाले अपव्यय को नियन्त्रित [illegible]

10) बेरोजगारी निवारण की आवश्यकता — [illegible] आज युवा लोगों में प्रश्न होती है अधिकांश नवयुवक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद नौकरियों की ओर दौड़ लगाते हैं। एक बार औपचारिक शिक्षा पूरी करने के उपरान्त नौकरी की मानसिकता और फिर बेरोजगार हो जाता है। आज इसी कारण नवयुवकों में असंतोष बढ़ रहा है, समाज में होने वाले अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है।

Scanned with CamScanner